6

[illegible]

कालिदास की रचनाएं – सात रचनाएं

महाकाव्य –	रघुवंशम्	19 सर्ग	शृंगार, [illegible]
	कुमारसम्भवम्	17 सर्ग	शृंगार, [illegible]
नाटक –	मालविकाग्निमित्रम्	5 अंक	शृंगार, [illegible]
	विक्रमोर्वशीय	5 अंक	शृंगार
	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7 अंक	शृंगार, [illegible]
खण्डकाव्य –	मेघदूत	[illegible] मेघ [illegible]	
गीतिकाव्य –	ऋतुसंहार		

मुख्य रस

कालिदास की रचनायें — सात रचनायें

महाकाव्य —	रघुवंशम्	19 सर्ग	शृंगार रस
	कुमारसम्भवम्	17 सर्ग	शृंगार रस
नाटक —	मालविकाग्निमित्रम्	5 अंक	शृंगार रस
	विक्रमोर्वशीय	5 अंक	शृंगार रस
	अभिज्ञानशाकुन्तलम्	7 अंक, शृंगार रस	सर्वश्रेष्ठ रचना
खण्डकाव्य —	मेघदूत		
गीतिकाव्य —	ऋतुसंहार		

काव्येषु नाटकं रम्यं, तत्र रम्या शकुन्तला ।
तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः, तत्र श्लोकचतुष्टयम् ॥

अभिज्ञानशाकुन्तलम् — अभिज्ञायते अनेन इति अभिज्ञानं
(अँगूठी पहचान का चिह्न)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् की प्रशंसा में विश्वप्रसिद्ध जर्मनकवि "गेटे" उनके "अभिज्ञानशाकुन्तलम्" के अनुवादमात्र का अध्ययन करके आनन्दविभोर हो गये और उक्त ग्रन्थ की अपूर्व प्रशंसा करते हुये यह कहना ही पड़ा —

Scanned with CamScanner

अभिज्ञानशाकुन्तलम् — अभिज्ञायते अनेन इति अभिज्ञानं
(अँगूठी पहचान का चिह्न)

अभिज्ञानशाकुन्तलम् की प्रशंसा में विश्वप्रसिद्ध जर्मन कवि "गेटे" उनके "अभिज्ञानशाकुन्तलम्" के अनुवादमात्र का अध्ययन करके आनन्दविभोर हो गये और इस ग्रन्थ की अपूर्व प्रशंसा करते हुये यह कहना ही पड़ा —

Wouldst thou see spring's blossoms and
the fruits of its decline.
Wouldst thou see by what the souls
enraptured, feasted fed.
Wouldst thou have this earth and heaven
in one sole name combine
I name thee oh Sakuntala ; and all at
once is said."

Scanned with CamScanner

अर्थात् प्रियमित्र ! यदि तुम बसन्त और वर्षा ऋतु के फूलों - फलों का तथा मन को प्रसन्न करने वाले रसायन और स्वर्गलोक और भूलोक के ऐश्वर्य को एक साथ देखना चाहते हो तो "शाकुन्तल" का सेवन करो ।

महाकवि बाण ने अपने हर्षचरित में महाकवि कालिदास की कविता की प्रशंसा करते हुये लिखा है ——

"निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिसु
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते ॥"

अर्थात् नवीन विकसित मञ्जरियों के सदृश मधुर एवं सरस कालिदास की सूक्तियों में उच्चारण मात्र से ही किसे आनन्द की अनुभूति नहीं होती ?

महाकवि बाण ने अपने हर्षचरित में महाकवि कालिदास की कविता की प्रशंसा करते हुये लिखा है —

"निर्गतासु न वा कस्य कालिदासस्य सूक्तिषु
प्रीतिर्मधुरसान्द्रासु मञ्जरीष्विव जायते ॥"

अर्थात् नवीन विकसित मञ्जरियों के सदृश मधुर एवं सरस कालिदास की सूक्तियों के उच्चारण मात्र से ही किसे आनन्द की अनुभूति नहीं होती ?

टीकाकार मल्लिनाथ ने तो कालिदास की कला के बारे में यहाँ तक लिख डाला —

Scanned with CamScanner

टीकाकार मल्लिनाथ ने तो कालिदास की कला के बारे में यहाँ तक लिख डाला —

कालिदासगिरां सारं कालिदाससरस्वती ।
चतुर्मुखोऽथवा ब्रह्मा विदुर्नान्ये तु मादृशा: ॥"

अर्थात् कालिदास की वाणी के सार को आज तक केवल तीन व्यक्तियों ने ही समझा है, एक तो विधाता (ब्रह्मा) दूसरी वाग्देवी सरस्वती और तीसरे कालिदास स्वयं । मेरे समान अल्पज्ञ पुरुष उनको ठीक-ठीक समझ सकने में सर्वथा असमर्थ हैं ।

Scanned with CamScanner

कालिदास का सन्देश —

उनकी रचनाओं में विद्यमान एकमात्र यही सन्देश उपलब्ध होता है कि त्याग, तपस्या और तपोमय जीवन द्वारा ही मनुष्य अपने वास्तविक कल्याण की प्राप्ति कर सकता है। उनका यह सन्देश तीन तकारादि शब्दों द्वारा प्रकट किया जा सकता है— त्याग, तपस्या, तपोमय। तपोवन में पली सभ्यता के द्वारा ही जनसाधारण का वास्तविक कल्याण हो सकता है।

Scanned with CamScanner

कालिदास का सन्देश — विद्यमान उनकी रचनाओं में एकमात्र यही सन्देश उपलब्ध होता है कि त्याग, तपस्या और तपोमय जीवन द्वारा ही मनुष्य अपने वास्तविक कल्याण की प्राप्ति कर सकता है। उनका यह सन्देश तीन तकारादि शब्दों द्वारा प्रकट किया जा सकता है — त्याग, तपस्या, तपोमय। तपोवन में पली सभ्यता के द्वारा ही जनसाधारण का वास्तविक कल्याण हो सकता है। क्षुद्र स्वार्थ का निवारण त्याग द्वारा ही होना सम्भव है तथा सच्ची उन्नति तपस्या के बल पर ही की जा सकती है। मानव योनि में जन्म लेकर सांसारिक विषयों का दास बन जाना मानव जीवन का लक्ष्य नहीं है। आध्यात्मिक जीवन में ही सच्ची आत्मा का दर्शन सुलभ है तथा उसी के द्वारा निःश्रेयस (मोक्ष) को प्राप्त किया जाना भी सम्भव है।

Scanned with CamScanner